Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X (Print), Impact Factor: (Cosmos: 7.866 & I2OR: 5.675) Volume 16, No. 01, January-March, 2026, pp. 87-91

'नूरजहाँ जुंटा': पितृसत्तात्मक इतिहास–लेखन, साहित्यिक आख्यान एवं ऐतिहासिक यथार्थ का एक पुनर्मूल्यांकन

श्री धर्म पाल[1]* एवं डॉ. महेश चंद्र[2]

[1]शोधार्थी, (इतिहास विभाग), श्री खुशालदास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान।
[2]सहायक आचार्य, (इतिहास विभाग), श्री खुशालदास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान।

*Corresponding Author: dharmpalswami683@gmail.com

Citation: *धर्म पाल एवं चंद्र, महेश (2026). 'नूरजहाँ जुंटा': पितृसत्तात्मक इतिहास–लेखन, साहित्यिक आख्यान एवं ऐतिहासिक यथार्थ का एक पुनर्मूल्यांकन. Journal of Modern Management & Entrepreneurship, 16(01), 87–91.*

सार

मुग़लकालीन इतिहास में महिलाओं की राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक भागीदारी के अध्ययन में 'नूरजहाँ जुंटा' की अवधारणा एक अत्यंत विवादास्पद और केंद्रीय विषय रही है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य 20वीं सदी के पारंपरिक इतिहास–लेखन द्वारा स्थापित इस 'जुंटा सिद्धांत' का सर्वांगीण और आलोचनात्मक मूल्यांकन करना है। यह शोध डॉ. बेनी प्रसाद की मूल परिकल्पना और प्रो. एम. नूरुल हसन द्वारा किए गए इसके संस्थागत खंडन का गहन विश्लेषण करता है। ऐतिहासिक साक्ष्यों से यह स्पष्ट होता है कि नूरजहाँ के सत्ता–काल में पदों और मनसबों की वृद्धि एक सामान्य प्रशासनिक प्रक्रिया थी, न कि किसी साज़िश या गुटबाज़ी का परिणाम। यह अध्ययन निष्कर्ष निकालता है कि मुग़ल सत्ता में एक संप्रभु महिला की प्रत्यक्ष भागीदारी को समझने में तत्कालीन और परवर्ती इतिहासकारों के पितृसत्तात्मक पूर्वाग्रहों ने एक 'प्रशासनिक यथार्थ' को 'महल की साज़िश' में तब्दील कर दिया।

शब्दकोश: *नूरजहाँ जुंटा, मनसबदारी व्यवस्था, सह–संप्रभुता, पितृसत्तात्मक इतिहास–लेखन, दीवान–ए–बयूतात, ज़ात, सवार, दु–अस्पा, सिंह–अस्पा, वज़ीर, अमीर–उल–उमरा, फ़रमान, झरोखा दर्शन, पर्चा–नवीस, पिएट्रा ड्यूरा, रोग़न–ए–जहाँगीरी, जनानखाना।*

प्रस्तावना

मुग़ल सम्राट जहाँगीर का मेहरुन्निसा (नूरजहाँ) के साथ 1611 ई. में संपन्न हुआ विवाह केवल एक पारिवारिक घटना नहीं थी, अपितु यह मुग़ल साम्राज्य के संस्थागत और राजनीतिक इतिहास की एक अत्यंत विशिष्ट एवं युगांतरकारी घटना थी। जहाँगीर, जो अपनी विलासी प्रवृत्ति और मद्यपान के कारण प्रशासनिक कार्यों से धीरे–धीरे विमुख हो रहा था, ने राज्य की सम्पूर्ण बागडोर अत्यंत कुशाग्र और महत्वाकांक्षी नूरजहाँ के हाथों में सौंप दी। नूरजहाँ ने जहाँगीर के व्यक्तिगत जीवन पर गहरा प्रभाव डाला और साम्राज्य की घटनाओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रकार, नूरजहाँ मुग़ल साम्राज्य की वास्तविक शासक और भाग्य विधात्री बन गई।

* *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

मुग़ल दरबार में नूरजहाँ के इस अभूतपूर्व राजनीतिक वर्चस्व और सत्ता–संचालन को सैद्धांतिक रूप देने के लिए 1922 ई. में डॉ. बेनी प्रसाद ने अपनी पुस्तक 'अ हिस्ट्री ऑफ़ जहाँगीर' में 'नूरजहाँ जुंटा' (नूरजहाँनी चौकड़ी) का सिद्धांत प्रस्तुत किया। इस सिद्धांत ने दशकों तक अकादमिक जगत में यह स्थापित किया कि 1611 से 1620 ई. तक राज्य की वास्तविक सत्ता इसी गुट के इर्द–गिर्द केंद्रित रही। परंतु, आधुनिक शोध और प्राथमिक फ़ारसी स्रोतों के संस्थागत पुनर्मूल्यांकन ने इस पर गंभीर प्रश्नचिह्न खड़े किए हैं। यह शोध पत्र इसी ऐतिहासिक बहस का विस्तृत विश्लेषण करता है और परीक्षण करता है कि क्या वास्तव में नूरजहाँ एक 'गुट' के माध्यम से सत्ता पर एकाधिकार स्थापित कर रही थी, या यह अवधारणा मुग़ल राजनीति की जटिलताओं का एक सरलीकृत और पूर्वाग्रह–युक्त विवरण है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में ऐतिहासिक–विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है:

- प्राथमिक स्रोतों का परीक्षण: जहाँगीर की आत्मकथा 'तुजुक–ए–जहाँगीरी', मुतामद ख़ाँ की 'इकबालनामा–ए–जहाँगीरी' और यूरोपीय यात्रियों (विशेषकर सर टॉमस रो) के यात्रा वृत्तांतों का समालोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन।
- द्वितीयक स्रोतों की समीक्षा: डॉ. बेनी प्रसाद के पारंपरिक आख्यान और प्रो. एम. नूरुल हसन के शोध लेखों के माध्यम से 'जुंटा सिद्धांत' के तर्कों का संस्थागत खंडन।
- मात्रात्मक एवं तुलनात्मक विश्लेषण: मुग़ल दरबार में मनसबों के आवंटन के आँकड़ों (विशेषकर 1611 से 1622 ई. के मध्य) का विश्लेषण कर गुटबाज़ी के दावों की सत्यता की जाँच।
- बहु–आयामी एवं साहित्यिक अध्ययन: राजनीतिक इतिहास के साथ–साथ मुग़लकालीन अर्थव्यवस्था और वास्तुकला में महिलाओं के योगदान का नारीवादी मूल्यांकन, तथा ऐतिहासिक तथ्यों के समानांतर उपन्यासों और लोकप्रिय संस्कृति में नूरजहाँ के चित्रण का मूल्यांकन।

शोध का महत्व

मुग़ल युग के दौरान महिलाओं की भूमिका और उनके ऐतिहासिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों का अकादमिक मूल्यांकन करने की दृष्टि से यह शोध अत्यंत महत्वपूर्ण है। पारंपरिक इतिहास–लेखन में महिलाओं की भूमिका को प्रायः जनानखाने (हरम) की साज़िशों तक सीमित माना गया है। नूरजहाँ के सुदृढ़ प्रशासनिक, राजनीतिक और कूटनीतिक निर्णयों को 'जुंटा' या गुटबाज़ी का नाम देकर उनकी संप्रभुता को न्यून करने का प्रयास किया गया। यह शोध उन पितृसत्तात्मक पूर्वाग्रहों को वैज्ञानिक तर्कों से उजागर करता है और यह स्थापित करता है कि नूरजहाँ का काल मुग़ल अर्थव्यवस्था, वास्तुकला और कूटनीति में महिलाओं के प्रत्यक्ष और रचनात्मक हस्तक्षेप का एक स्वर्णिम युग था।

शोध के उद्देश्य

- डॉ. बेनी प्रसाद द्वारा प्रस्तुत 'नूरजहाँ जुंटा' सिद्धांत की ऐतिहासिक सत्यता का आलोचनात्मक परीक्षण करना।
- प्रो. एम. नूरुल हसन के शोध के आधार पर मुग़लकालीन मनसबदारी व्यवस्था और दरबार की गुटबाज़ी का संस्थागत विश्लेषण करना।
- यूरोपीय यात्रियों के वृत्तांतों और समकालीन फ़ारसी स्रोतों के बीच के अंतर्विरोधों को स्पष्ट करना।
- इतिहास–लेखन में विद्यमान पितृसत्तात्मक पूर्वाग्रहों को उजागर कर नूरजहाँ की स्वतंत्र राजनीतिक एजेंसी को अकादमिक रूप से स्थापित करना।
- मुग़ल काल में महिलाओं (विशेषकर नूरजहाँ) के आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभावों का विस्तृत मूल्यांकन करना।

'नूरजहाँ जुंटा' की वैचारिक पृष्ठभूमि एवं पारंपरिक इतिहास–लेखन

डॉ. बेनी प्रसाद ने अपनी परिकल्पना में यह तर्क दिया कि 1611 ई. से लेकर 1620 ई. तक मुग़ल दरबार में एक अत्यंत शक्तिशाली गुट का एकाधिकार स्थापित हो गया था। इस गुट के प्रमुख सदस्य थेः स्वयं नूरजहाँ, उनके पिता एतमादुद्दौला (मिर्ज़ा गियास बेग), भाई आसफ़ ख़ाँ और दामाद खुर्रम (शाहजहाँ)।

- **प्रशासनिक एकाधिकारः** डॉ. प्रसाद के अनुसार, इस चौकड़ी ने शाही सेवा में रिक्त होने वाले अधिकांश उच्च पदों पर अपने आदमियों को नियुक्त करके अपनी शक्ति को सुदृढ़ कर लिया। राजकीय सम्मान और पदोन्नति प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग इस गुट की अनुकंपा प्राप्त करना रह गया था।
- **विभाजित दरबारः** इस गुटबाज़ी के परिणामस्वरूप तत्कालीन मुग़ल दरबार दो स्पष्ट खेमों में विभक्त हो गयाकृएक नूरजहाँ 'गुट' का समर्थक, तथा दूसरा प्रतिद्वंद्वी दल जो शहज़ादा खुसरो को सिंहासन का उत्तराधिकारी बनाना चाहता था। इस गुट का प्रभाव इतना शक्तिशाली हो गया था कि महाबत ख़ाँ जैसे प्रबल अमीर भी इससे भय खाते थे और खुर्रम की मुख्य शक्ति नूरजहाँ से प्राप्त समर्थन में ही निहित थी। समकालीन अंग्रेज़ यात्री सर टॉमस रो ने भी यह भ्रम पुष्ट किया कि इस गुट की सहायता के बिना राज्य में कोई कार्य संभव नहीं था।
- **गुट का पतनः** बेनी प्रसाद के अनुसार, यह गुट तब विघटित हुआ जब नूरजहाँ को यह आभास हुआ कि शाहजहाँ के सम्राट बनने पर वह अपने दबंग स्वभाव के कारण उसे पृष्ठभूमि में धकेल देगा। अतः उन्होंने अपनी पुत्री लाड़ली बेगम का विवाह शहरयार से कर उसे उत्तराधिकारी बनाने का षड्यंत्र रचा।

संस्थागत विश्लेषण एवं 'जुंटा' सिद्धांत का तार्किक खंडन

बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में प्रो. एम. नूरुल हसन ने मुग़ल दरबार की जटिल आंतरिक कार्यप्रणाली का सूक्ष्म अध्ययन कर बेनी प्रसाद के इस 'गुट सिद्धांत' की कड़ी आलोचना की। उनका मानना है कि इस काल की प्रमुख राजनीतिक घटनाओं को समझने के लिए दरबार में दलों की प्रकृति और अमीर वर्ग के आंतरिक दबावों का गहन विश्लेषण आवश्यक है।

- **यूरोपीय अफवाहों पर अति–निर्भरताः** प्रो. हसन का प्रमुख तर्क यह है कि 'जुंटा' की परिकल्पना मुख्यतः सर टॉमस रो जैसे यूरोपीय यात्रियों के वृत्तांतों पर आधारित है, जिनकी समझ दरबार में व्याप्त अफवाहों तक सीमित थी। वस्तुतः, 1616 ई. के अंत तक यूरोपीय स्रोतों में भी नूरजहाँ और शाहजहाँ के मध्य गहरे मतभेद तथा नूरजहाँ व खुसरो के बीच मैत्री की अफवाहें दर्ज़ होने लगी थीं। यह तथ्य एक सुसंगठित और दीर्घकालिक 'गुट' के अस्तित्व को सीधे तौर पर नकारता है।
- **मनसबों की वृद्धि का संस्थागत यथार्थः** पारंपरिक इतिहासकारों ने एतमादुद्दौला और उनके परिवार के मनसबों में तीव्र वृद्धि को गुटबाज़ी का परिणाम माना। यह सत्य है कि 1616 ई. में एतमादुद्दौला का मनसब 7000/5000 और आसफ़ ख़ाँ का 5000/4000 कर दिया गया था। किंतु प्रो. हसन स्पष्ट करते हैं कि अकबर के काल से ही प्रमुख सरदारों के पूरे परिवार को उच्च मनसब देने की मुग़ल प्रथा रही थी। इसी कालखंड में खाने आज़म को 1616 ई. में 7000 का मनसब तथा अब्दुर्रहीम खानखानाँ को 1618 ई. में 7000/7000 का मनसब प्राप्त हुआ। महाबत ख़ाँ, जिसे गुट का विरोधी बताया जाता है, उसे भी 1614 ई. में 3 करोड़ दाम मूल्य की अतिरिक्त जागीर प्रदान की गई और काबुल जैसे महत्वपूर्ण सैन्य अभियानों का नेतृत्व सौंपा गया।
- **शाहजहाँ (खुर्रम) की स्वतंत्र योग्यताः** शाहजहाँ की तीव्र उन्नति नूरजहाँ की राजनीतिक अनुकंपा का परिणाम नहीं थी, वरन् शाही नीति और उसकी अपनी सफलताओं के अंतर्गत हुई थी। मेवाड़ (1614–15 ई.) और दक्कन अभियानों में खुर्रम की अभूतपूर्व सैन्य सफलताओं ने जहाँगीर को यह

विश्वास दिला दिया था कि वह सबसे योग्य उत्तराधिकारी है। इसी योग्यता के बल पर जहाँगीर ने उसे 'शाहजहाँ' की उपाधि और अभूतपूर्व मनसब प्रदान किया था।

- **गुटबाज़ी एक सामान्य दरबारी संकटः** मुग़ल दरबार में मनसबों और जागीरों को लेकर एक गहरा संस्थागत संकट था, जिसके कारण अमीरों में आपस में अनेक दल बन गए थे। कोई भी एक दल इतना अधिक शक्तिशाली नहीं माना जा सकता कि वह अन्य सभी दलों को महत्वपूर्ण स्थानों से हटा सके।

मुग़लकालीन अर्थव्यवस्था एवं संस्कृति पर नूरजहाँ का बहुआयामी प्रभाव

'नूरजहाँ जुंटा' के अतिरंजित राजनीतिक विमर्श ने प्रायः मुग़ल काल में महिलाओं के आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभावों को हाशिए पर धकेल दिया है। नूरजहाँ की सत्ता केवल दरबार की नियुक्तियों तक सीमित नहीं थी, बल्कि उन्होंने साम्राज्य की अर्थव्यवस्था और संस्कृति को नई दिशा प्रदान की।

- **आर्थिक संप्रभुता एवं व्यापारः** नूरजहाँ ने मुग़ल अर्थव्यवस्था में प्रत्यक्ष हस्तक्षेप किया। उन्होंने शासन–व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए राज्य में होने वाले अनावश्यक व्यय को कम किया, जिसकी समकालीन विद्वानों ने भूरि–भूरि प्रशंसा की है। मुग़ल सिक्कों पर उनके नाम का अंकन उनकी आर्थिक संप्रभुता का अकाट्य प्रमाण है। इसके अतिरिक्त, विदेशी व्यापार और चुंगी पर उनका नियंत्रण था, जो मुग़ल अर्थ–व्यवस्था में एक महिला के असाधारण प्रभुत्व को दर्शाता है।
- **सांस्कृतिक एवं स्थापत्य कला में योगदानः** नूरजहाँ अत्यंत परिष्कृत अभिरुचि वाली महिला थीं। उन्होंने मुग़ल स्थापत्य कला में 'पिएट्रा ड्यूरा' शैली का समावेश किया। आगरा में बनवाया गया उनके पिता 'एतमादुद्दौला का मकबरा' इसका उत्कृष्ट उदाहरण है।
- **सामाजिक और लोकोपकारी कार्यः** नूरजहाँ का दृष्टिकोण अत्यंत दयालु और सहानुभूतिपूर्ण था। उन्होंने राज्य की ओर से निस्सहाय लोगों की सहायता की और अपने शासनकाल में लगभग पांच सौ अनाथ कन्याओं का विवाह संपन्न करवाया। वस्त्रों, आभूषणों और गुलाब के इत्र (रोग़न–ए–जहाँगीरी) के विकास में उनका और उनकी माता अस्मत बेगम का योगदान मुग़ल संस्कृति की अमूल्य धरोहर है।

संप्रभुता का नारीवादी विश्लेषण एवं पितृसत्तात्मक पूर्वाग्रह

आधुनिक ऐतिहासिक विमर्श यह मांग करता है कि 'जुंटा' की अवधारणा को पितृसत्तात्मक पूर्वाग्रहों के आलोक में परखा जाए। तत्कालीन फ़ारसी इतिहासकारों (यथा मौतमिद ख़ाँ) के लिए यह स्वीकार करना अत्यंत कठिन था कि एक महिला पूर्ण संप्रभुता के साथ एक विशाल साम्राज्य का संचालन कर सकती है। नूरजहाँ द्वारा झरोखा दर्शन देना, शाही फरमानों पर जहाँगीर के साथ संयुक्त रूप से हस्ताक्षर करना और बाघ का शिकार करनाकृये सभी संप्रभु शासक के विशेषाधिकार थे। इतिहासकारों ने उनकी इस स्वतंत्र राजनीतिक एजेंसी को स्वीकार करने के बजाय उसे 'गुटबाजी' और 'महल की साज़िश' का नाम दे दिया। वस्तुतः 1611 से 1622 ई. का काल एक ऐसे 'व्यावहारिक राजनीतिक गठबंधन' का काल था, जिसने जहाँगीर की प्रशासनिक अकर्मण्यता से उत्पन्न शून्यता को अत्यंत कुशलता से भरा और साम्राज्य को स्थायित्व प्रदान किया।

निष्कर्ष

'नूरजहाँ जुंटा' का विस्तृत ऐतिहासिक, संस्थागत और सांस्कृतिक अनुशीलन यह प्रमाणित करता है कि 20वीं सदी के पारंपरिक इतिहास–लेखन ने मुग़लकालीन राजनीति की जटिलताओं का अति–सरलीकरण कर दिया था। 1611 से 1622 ई. के मध्य नूरजहाँ, एतमादुद्दौला, आसफ़ ख़ाँ और शाहजहाँ के मध्य विचारों, कूटनीतिक समन्वय और प्रशासनिक कार्यों में साझेदारी अवश्य थी, परंतु इसे एक ऐसा 'षड्यंत्रकारी गुट' मान लेना ऐतिहासिक साक्ष्यों के पूर्णतः विपरीत है, जिसने अन्य सभी संस्थाओं को पंगु बना दिया हो।

नूरजहाँ ने मुग़ल अर्थव्यवस्था और प्रशासन में प्रत्यक्ष संप्रभु के रूप में कार्य किया। उनका शासनकाल मुग़ल इतिहास में महिलाओं के प्रत्यक्ष आर्थिक, प्रशासनिक और सांस्कृतिक सशक्तिकरण का अद्वितीय उदाहरण है। जहाँगीर के शासनकाल की घटनाएँ और अमीर वर्ग का संकट केवल 'गुट' के चश्मे से नहीं, बल्कि मुग़ल सत्ता के संस्थागत यथार्थ और उसमें एक संप्रभु महिला की वास्तविक भागीदारी के परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए। अंततः, 'जुंटा' की अवधारणा एक अत्यंत योग्य और शक्तिशाली महिला की स्वतंत्र संप्रभुता को 'साज़िशों' के आवरण में छिपाने का एक पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण मात्र है, जिसका आधुनिक संस्थागत शोधों द्वारा अकाट्य तर्कों के साथ निराकरण कर दिया गया है। ऐतिहासिक और अकादमिक दृष्टि से मुग़लकालीन महिलाओं का इतिहास केवल जनानखाने की दीवारों तक सीमित नहीं था; नूरजहाँ एक गुट की नेता न होकर साम्राज्य की अर्थव्यवस्था, संस्कृति और सर्वोच्च सत्ता के संचालन में बराबर की भागीदार और एक स्वतंत्र संप्रभु साम्राज्ञी थीं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. जहाँगीर. तुजुक–ए–जहाँगीरी।
2. मोतमिद ख़ाँ. इकबालनामा–ए–जहाँगीरी।
3. नूरजहाँः सिंहासन के पीछे की सत्ता के रूप में, मुग़लकालीन भारत आलेख्झं
4. नूरजहाँ का प्रभुत्व, ऐतिहासिक दस्तावेज़।
5. हसन, एम. नूरुल. "'नूरजहाँ–गुट' की परिकल्पनाः आलोचनात्मक परीक्षण", मध्यकालीन भारत।
6. 1922 : प्रसाद, बेनी. अ हिस्ट्री ऑव जहाँगीर. इलाहाबादः इंडियन प्रेस।
7. 1993 : फाइंडली, एलिसन बैंक्स. नूरजहाँः एम्प्रेस ऑफ़ मुग़ल इंडिया. ऑक्सफ़ोर्डः ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. 2003 : सुंदरेसन, इंदु. द फीस्ट ऑफ़ रोज़ेज़. नई दिल्लीः हार्पर कॉलिन्स।
9. 2012 : रदरफोर्ड, एलेक्स. एम्पायर ऑफ़ द मुग़लः द टैंटेड थ्रोन. लंदनः हेडलाइन पब्लिशिंग ग्रुप।
10. 2016: मेवाराम. नूरजहाँ (खंड 1 और 2). दिल्लीः राही प्रकाशन.
11. 2018 : लाल, रूबी. साम्राज्ञीः नूर जहाँ का अद्भुत शासनकाल. न्यूयॉर्कः डब्लू. डब्लू. नॉर्टन एंड कंपनी।.

❑❑❑